पश्चिम बंगाल का लोक संगीत - भवइया एवं उसकी वर्तमान परिस्थिति

अमिता कर शोधार्थी, संगीत विभाग वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान Email: debal.kar@gmail.com	डॉ. सुजीत देवघरिया एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान Email: sujitdeoghoria@gmail.com

सारांश

भारतीय धर्म एवं संस्कृति के विकास में पश्चिम बंगाल का विशेष योगदान रहा है. भारतीय चिंतन की अनेक ज्ञानदायिनी धाराओं का प्रस्फुटन भी यही से हुआ है. संगीत सर्वदा ही संस्कृति का संगी रहा है और पश्चिम बंगाल के उत्तरी भागों के 'भवइया' लोक संगीत यहाँ के राजवंशी लोगों की संस्कृति की धरोहर है. ये संगीत उतने ही प्राचीन एवं अनादी है जितना की मानव जाति. कंठ मानव की सहज एवं स्वभाविक देन है, और यही उसके गीत तथा वाद्यों का निर्माण एवं उसके स्वर क्षेत्र को निर्धारित करता है.

भवइया गीत का उदगम स्थल कूचबिहार जिला होने के कारण इस लेख में कूचबिहार व उसके आस-पास वाले अंचलों के विवरण को शामिल किया जाएगा. 'कूचबिहार' भारतवर्ष में पश्चिम बंगाल के उत्तरी भाग (बंगाल और बिहार का सीमा क्षेत्र) में स्थित है. यह राज्य शाही रियासत का अवशेष है. अतः मैं वहाँ के राज परिवार और प्राचीन 'कोच राजवंशी' के इतिहास को भी यहाँ आलोचना करने का प्रयत्न करूंगी क्योंकि 'भवइया के साथ इस राज परिवार का एक गहरा सम्पर्क रहा.

भवइया गायन शैली का सम्बन्ध देशी संगीत से है. इस गायन शैली के कई प्रकार भी हैं, जिसका पूर्ण परिचय भी उदाहरण के साथ दिया जाएगा. गीतों के धुनें प्रायः इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, भाषा, रहन-सहन, पशु-पक्षी एवं आचार-विचार व व्यवहार, वाद्य यंत्र आदि के आधार पर बनी हुई होने के कारण उन सभी विषयों का उल्लेख भी यहाँ किया जाएगा. सर्वपरि प्राचीन समय से लेकर आजतक इस गीत शैली में जो जो परिवर्तन तथा उन्नत साधन हुआ है, उसका विवरण तथा वर्तमान समय के कुछ गायक/गायिकाओं का नाम भी इस लेखनी में उल्लेखित करने का प्रयास किया जाएगा.

मुख्य शब्द - भवइया संगीत, कूचबिहार, राजवंशी, लोकगीत, कोच वंश, प. बंगाल

कूचबिहार राज्य एवं राज परिवार:

भारत के पश्चिम बंगाल प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित कूचबिहार जिले नाम का एक नगर है, 'जिसमें शाही रियासत के अवशेष है. सन् 1586 से सन् 1949 तक यह एक छोटी रियासत के रूप में थी'[1]. यह पूर्वी हिमालय की तलघटी में है. यह शहर तोर्षा नदी के किनारे स्थित है, और तिस्ता तथा संकोश नदियाँ ब्रह्म पुत्र में मिलने से पहले इस जिले से होकर गुजरती है.

भूटान के दक्षिण एवं बिहार की सीमा पर स्थित कूचबिहार शहर कामरूप (आसाम) के प्राचीन हिन्दु शासकों के राज्य का एक अंग था. 'भास्कर बर्मा के (लगभग 600-650ई.) काल में यह राज्य 'करतोया' तक फैला हुआ था. परंतु 16 वीं सदी के आरंभ में वह कामरूप से अलग हो गया और नए राज्य की राजधानी 'कूचबिहार' बन गया, जिसकी स्थापना सन 1510 में महाराज विश्वसिंह ने की थी. विश्वसिंह के द्वितीय पुत्र और इस वंश के उत्तराधिकारी नरनारायण (1540-1584) ने आसाम का काफी बड़ा भू-भाग अपने अधीन कर लिया था और आधुनिक रंगपुर (बांग्ला देश) जिले के दक्षिण सीमा तक अपनी शक्ति को विस्तृत किया. वह हिन्दुत्व कला व साहित्य का बहुत बड़ा पृष्ठ पोषक था. उन्होंने गौहाटी के निकट कामाख्या देवी के मंदिर का फिर से निर्माण करवाया था. यह मंदिर 'काला पहाड़े' नामक मुस्लिम लोगों ने हमले द्वारा ध्वस्त कर दिया था'[2].

'कूचबिहार राज्य के अन्यतम निदर्शन है यहाँ का 'राजबाड़ी' या 'राज पैलेस', जिसे विक्टर पैलेस भी कहा जाता है, इसे महाराज नृपेन्द्र नारायण (16 Oct. 1884 -18 Sep. 1911) के शासन काल के दौरान सन् 1887 में लंदन के बकिंघम पैलेस के बाद बनाया गया था. इसका निर्माण यूरोपियन शैली में किया गया था. इटली के पुनःजागरण काल के दौरान (1350 ई. से 1600 ई तक) यूरोप में जिस वास्तुकला का विस्तार हुआ, यह पैलेस उसी का प्रतिनिधित्व करता है'[3].

'भवइया' लोक संगीत बंगाल के उत्तर भाग (कूचबिहार, जलपाईगुड़ि, दार्जिलंग जिला के तलघटी), अविभक्त आसाम के 'गोयाल पाड़ा', बांग्ला देश के उत्तरांश एवं नेपाल के कुछ अंश व बिहार प्रान्तों के लोगों की आत्मा और मिट्टी के साथ जुड़ा हुआ है, यह 'भवइया' संगीत दूसरे लोक संगीत से स्वतन्त्र भी है. इस संगीत का सृष्टा उत्तर बंगाल का ही राजवंशी समाज है. इन लोगों की भाषा 'राजवंशी' होने के कारण इस संगीत की भाषा 'राजवंशी' है. प्राचीन समय में कूचबिहार राज्य कोच शासनों के अधीन में था. कोच नामक क़बाईलियों के आधार पर ही इस राज्य का नाम कूचबिहार या कोचबिहार पड़ा. इस राज्य के पहले राजा बने विश्वसिंह. महाराज विश्वसिंह ने हिन्दु धर्म ग्रहण करके इस समाज में 'राजवंशी' रूप से प्रतिष्ठित हुए हैं. जिन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण किया उन्हें 'केवट राजवंशी' नाम दिया गया और जिन्होंने कोई धर्म ग्रहण नहीं कि वो 'कोच' ही रहे.

प्राचीन 'कोच राजवंशी' समाज स्त्री प्रधान समाज था. हिन्दू धर्म व मुस्लिम धर्म ग्रहण करने के पश्चात् यह स्त्री प्रधान समाज व्यवस्था पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में रूपांतरित हो गयी. लेकिन यह 'राजवंशी' को लेकर

---

[1] http://coochbehar.nic.in/htmfiles/rajbari-exclusive.html अभिगमन तिथि – 18.8.2019.

[2] http://coochbehar.nic.in/htmfiles/rajbari-exclusive.html अभिगमन तिथि – 18.8.2019.

[3] http://bn.m.wikipedia.org अभिगमन तिथि – 19.08.2019.

कुछ अन्य मत विरोध भी है. कुछ लोगों के अनुसर यह राजवंशी लोक क्षत्रिय है और कुछ लोगों ने इन्हें भग्न क्षत्रिय या ब्रात्य क्षत्रिय कहा है. जो भी हो, पश्चिम बंगाल के उत्तर भागों का जनप्रिय लोक संगीत है, 'भवइया', इस भवइया गायन शैली में लोक संगीत के सभी वैशिष्ट रहे है, इसलिए इस संगीत को लोक संगीत भी कहा गया है.

भवइया नाम करण व लौकिक परंपरा:

कुछ लोगों का कहना है कि भवइया भावपूर्ण लोकगीत होने के कारण इसका नाम भवइया पड़ा एवं 'भवइया' शब्द की उत्पत्ति 'भाव' शब्द से हुई है. पर संगीत के जगत में क्या ऐसा कोई संगीत है जिसमें भाव ना हो? हर संगीत में ही कम-ज्यादा भाव का प्रकाश है. भवइया को हम केबल मात्र प्रेम गीत ही नहीं कह सकते क्योंकि इस गीत में 'प्रेम के रंगों के साथ-साथ अन्य रंग-रस-तथा अनुभूतियों का समावेश सुनने को मिलता है, जैसे -वात्सल्य, सामाजिक व धर्मीय अनुष्ठान, शादी-विवाह, खेतों में काम करते समय आदि. विभिन्न समय पर गीत गाने का रिवाज़ इस संगीत में है. 'कुछ विद्वानों का मानना है कि 'भवइया' शब्द 'भाओआ' शब्द से आया है, कुछ लोग कहते हैं 'वाओ' शब्द से, फिर कोई कहता है, 'भाओ' से. 'वाओदिया' व 'वाओड़ा' शब्द से 'भवइया' की उत्पत्ति हुई है, ऐसा मत भी कुछ लोगों ने दिया है. लेकिन कुछ लोग यह भी कहते हैं कि 'भवइया' शब्द 'वाओयाईया' शब्द का विवर्तित रूप है. 'वाओ' शब्द का अर्थ है 'हवा', मईशाल बन्धु के (भैंस चराने वाले) द्वारा गाये जाने वाले गीत के सुर अथवा खेतों में काम करते समय कृषक जो गीत गाते थे, उसके मधुर सुर उन्मुक्त प्रांतर से हवा के साथ आकर लोक समाज में पहुँचते थे, अर्थात् लोगों का कर्णगोचर होता था. इसी कारण इस संगीत का नाम 'वाओयाईया' दिया गया. 'वाओयाइया' ही परवर्ती काल में रूपांतरित होकर 'भवइया' हो गया'[4]. परंतु उत्तर बंगाल के राजवंशी लोग इस गाने की सृष्टिकर्ता होने के नाते यहाँ उन लोगों के मतों की पर्यालोचना करना या विचार करना भी जरूरी है.

'उन लोगों के अनुसार 'भवइया' शब्द का अर्थ निम्न रूप से है. जैसे -

'भाओ - भाव

भाओ -चलन

भाओ - हवा

भाओ - भाओया, भाओया बाड़ी, चारण क्षेत्र अर्थात् पशुओं को चरागाह करने के लिए जो क्षेत्र प्रयुक्त होता है'[5]. 'भवइया' सम्बंधित प्रचलित अनेकानेक मतों में से 'भवइया' के एकनिष्ठ सुर साधक प्रयात 'सुरेन राय बसुनिया' के अनुसार - 'भावपूर्ण', संगीत जो मानव मन को प्रभावित कर भावान्वित व तन्मय कर देता है वही 'भवइया' संगीत है. 'भाव-भाओ+इया=भवइया. इसलिए भवइया की व्युत्पत्ति अर्थ 'जो भाव प्रकाश करते हैं', अर्थात् भाव प्रकाश करने वाले या वाली के लिए सृष्ट गान'[6]. यह संगीत इतना ही सहज-सरल है कि गाना आरंभ होने के साथ-

[4] देव, रनजित: लोक साहित्य भवइया गान, पृ.-xiv.

[5] बर्मा, सुखविलास: भवइया चटका, पृ.-19.

[6] देव, रनजित: लोक साहित्य भवइया गान, पृ.-xv.

साथ ही इस गाने का भाव प्रकाशित होने लगता है, इसी कारण इस गाने का नाम 'भवइया' दिया गया है. अर्थात् 'भवइया' गान अपने आप मानव हृदय से निःसृत हुआ गीत एवं मानव की कला सुर व छंद का विकास है.

'भवइया' संगीत के जादुगर अब्बास उद्दीन खां साहब के मतानुसार, 'भवइया संगीत उत्तर बंगाल तथा कूचबिहार शहर की निजी सम्पत्ति है. इस संगीत का चलन हवा जैसा है, इसलिए यह संगीत भवइया संगीत कहलाता है. अब्बास उद्दीन खां सुर साधक सुरेन राय बासुनिया के शिष्य थे'[7].

'भवइया' गवेषक गौरीपुर (आसाम) निवासी प्रयात शिवेन्द्र नारयण मंडल जी के मतानुसार, जो गाना मानव मन को उदास कर देता है वही 'भवइया' संगीत है. 'भाव+इया=भाविया=भवइया, अर्थात् यह गान के सुर व विषय वस्तु मन में शिहरन जगाकर मन को आप्लुत कर देती है. अतः 'भवइया' का अर्थ है, 'मन को उदास करने वाला संगीत'[8].

'उत्तर बंगाल के एक और कृति छात्र एवं बांगला देश के कालीगंज उपजिला अधुना लालमणिर हाट जिला (पुरातन रंगपुर जिला) निवासी कालीगंज उच्चविद्यालय के प्रधान शिक्षक प्रयात धर्म नारायण सरकार जी के मतानुसार, 'भवइया' शब्द का अर्थ 'भावोथ्थित''[9]. इस शब्द का उच्चारण करने का तरीका 'ओ' की तरह है. जैसे - 'देव' को 'देओ' बोलने की प्रक्रिया. उसी तरह 'भाव' को 'भाओ' बोलना एवं उसी से ही 'भाओइया' से 'भवइया' शब्द का आविर्भाव हुआ होगा. अर्थात् भाव से विभोर प्राण की स्वतः स्फुर्त उच्छास से सृष्ट गान ही 'भवइया' गान या लोकसंगीत है.

पश्चिम बंगाल सरकार के द्वारा आयोजित 'लालन पुरस्कार' के विजयी भवइया कलाकार तथा गीतिकार प्रयात प्यारी मोहन दास भी धर्म नारायण जी के मत को समर्थन करते हैं. 'शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत के साधक उत्तर बंगाल के एक और कृति छात्र कुमार निधिनारायण के मतानुसार, भाव-भाओं से ही भवइया शब्द की उत्पत्ति हुई है'[10].

पूर्वोक्त की गई सभी आलोचना अभिज्ञ विद्वानों की थे किंतु 'भवइया' को लेकर ग्रामीण साधारण कलाकारों के द्वारा की गई चिंतन धारा क्या थी, वो अभी ज्ञात होना जरूरी है. इस उद्देश्य से पश्चिम बंगाल (लोक संस्कृति पर्षद) सरकार के द्वारा आयोजित 'भवइया कथा व सुर' इस गवेषणा क्षेत्र समीक्षा से प्राप्त ग्रामीण कलाकारों के मतामत की विवेचना की जा सकती है. इन कलाकारों में से है - अनपढ़ कलाकार, विश्वविद्यालय से स्नातक कलाकार, एवं कूचबिहार जलपाईगुड़ि एवं धुबड़ी आदि जिला की विभिन्न प्रान्त में प्राप्त 98 साधारण कलाकार के मतामत. इन कलाकारों में से केबल मात्र दो कलाकारों का कहना है - 'भाओया' शब्द से 'भवइया' की उत्पत्ति, बाकी सबका अभिमत है कि 'भाव > भाओ और भाओ से 'भवइया' शब्द की उत्पत्ति हुई है'[11]. इस

[7] वही.

[8] बर्मा, सुखविलास: भवइया चटका, पृ.-31

[9] वही, पृ.-29.

[10] वही, पृ.-31.

[11] वही, पृ.-29.

भाव का अर्थ है प्रेम, मन का भाव, उदास भाव, वाउरा अथवा वाउदिया' भाव कुछ भी हो सकता है. अतःएव उपरोक्त पर्यालोचना के बाद हम यह कह सकते हैं कि 'भाव' या 'भाओ' शब्द से ही 'भवइया' शब्द का आविर्भाव हुआ है एवं यही नामकरण ही अधिकतर यूक्तिपूर्ण है. 'कामरूपी' या 'राजवंशी' के भाषा में 'भाव' शब्द का एक और अर्थ है 'प्रेम या प्रणय', इसलिए 'भावेरबन्धु', 'भावेर देवरा' आदि शब्द भवइया संगीत में मिलते हैं. इस हिसाब से भी भाव > भाओ=भवइया शब्द की उत्पत्ति युक्तियुक्त है.

लौकिक परंपरा – लौकिक परंपरा के अनुसार 'भवइया' गीत अनेकानेक नाम से परिचित है, जैसे - मैशाली गान, गाड़ियाली गान, पाथारी गान, उदासी गान, दोतारार गान, वाहेरार गान, मन भुलानी गान, वाउदियार गान आदि. पर हर एक नामकरण लोगों के जीवन के साथ जुड़ा हुआ है.

भवइया की वर्णना - उत्तर बंगाल के 'राजवंशी समाज' ही भवइया गीत के सृष्टा, धारक व वाहक है, लेकिन इस गाने का ऐतिहासिक गुरुत्व केबल मात्र राजवंशी समाज के हिन्दुओं ने ही नहीं बल्कि मुस्लिम संप्रदाय के अनेकानेक कलाकारों ने भी इस गाने को रचा एवं गाकर विशेष कलाकारों के रूप में सम्मान अर्जित कर प्रतिष्ठा पाई.

प्राचीन समय में यह समाज नारी प्रधान था, उसके पश्चात् इस समाज व्यवस्था में नारी के बदले में पुरुष को प्राधन्य दिया गया. नारी प्राधान्य रहने के कारण इस संगीत में नारी के विरह, प्रेम-वासना, समाज की गइराई से निचर के निःसृत हुआ एक सामाजिक चित्र है. इसी कारण प्रेमिका के जीवन में नायक बन जाते थे - समाज का एक-एक साधरण मानुष, जैसे-माहुत बन्धु (हाथी चालक), गाडियाल बन्धु (बैल-गाड़ी चालक), मईशाल बन्धु (भैंस चालक), वैद, साधु, नाव चलाने वाला मछुवाहों आदि. इन लोगों के प्रति नारी मन की आशा-आकांक्षा का निवेदन, भावइया गीत के करूण सुर-ताल तथा मूर्छना हृदय को मोहित एवं अभिभूत कर देती है.

बंगाल की भू-प्रकृति, परिवेश जातित्व, भाषातत्व सभी ने मिलकर एवं सभी का सहारा लेकर 'भवइया' का कथा-छंद-ताल स्पंदित हुआ है. प्रकृति यहाँ कभी प्रेमी तो कभी प्रेम या विरह के प्रतीक के रूप में दिखाई देती है. जैसे -दोयेल, बगुला, भंवरा, करूया, कोयल आदि विभिन्न रूप से नारी जीवन के प्रेमिका या नागर के प्रतीक के रूप में चित्रित हुआ है.

उदाहरण के लिए एक गाना

(1) '(ओरे) नदीर पाड़ेर कुरूयारे मोर
जामेर (जामुन) गाछेर सूया
(आजि) केने कांदेन अमन करि
चोखेर जल फैलेया रे
कोड़ारे मुई ओ कान्दं
टिटुल विदुया हया.
(कम उम्र की विधवा)'[12]

[12] देव, रनजित: लोक साहित्य भवइया गान, पृ.-xv.

राजवंशी समाज में लड़कियों की शादी-विवाह कम उम्र में ही ज्यादा उम्र वाले लड़के के साथ हो जाने का चलन था. इसके फलस्वरूप लड़कियों कम उम्र में ही विधवा हो जाती थी. यह नाबालिक लड़कियों के मन में छिपा हुआ गहरा प्रेम, दहेज, विधवा विवाह, ग्राम्य नारी के जीवन कथा - ये सभी विषयों का वर्णन ही भवइया संगीत में रहता है. उत्तर बंगाल के गाय चराने वाला विस्तीर्ण जमीन (गो-चारण भूमि), नदी के चढ़भूमि, महीश (भैस) चराने वाला बालक-यह सभी ने भवइया गाने के ग्रामीण पटभूमि को रचने में जैसे सहयोग किया ठीक उसी तरह यहाँ के तोर्षा, कालजानी, तिस्ता, रायडाक, मानसाई आदि नदियों की गति वेग के साथ भवइया की सुर, छंद तथा ग्राम्य नारी के सुख-दुखमय जीवन कहानी व प्रेम कहानी मिलकर एक हो गयी.

उदाहारण: 'तोर्षा नदी उताल-पाताल कार वा नाव चले.

इस तरह का दर्द भरा संगीत और कोन से गाने में है, यह नहीं पता!!

सुप्रसिद्ध भवइया गायक अब्बास उद्दीन की भाव मिश्रित आवाज़ व दोतारा की डां नारी मन को पागल कर देती थी, उस गाने के सुर से नर-नारी दोनों ही मूर्छा जाते थे. शुरु से ही 'भवइया' गीत के गायक निरंतर चलते आ रहे हैं और यही उनके जीवन का सत्य है. कभी भैंस के पीठ पर तो कभी नाव पर, कभी हल चलाते समय तो कभी हाथी की पीठ पर बैठकर यही गाना गाते हैं. अर्थात् चलते हुए जीवन का गाना ही 'भवइया' लोकगीत है.

उदाहरण –

1. **हाथी चालक के उद्देश्य में एक गाना**

   'तोमरा गेले कि आसिबेन
   मोर माहुत बन्धु रे (हाथी चालक)
   हस्ती नवान, हस्ती चबान, हस्तीर गलाय दरि
   ओरे सत्य करिया कन रे माहुत
   कोन वा देशे वा नीवे'[13]

2. **मईशाल बन्धु के लिए गाना**

   'ओरे धीक धीक धीक मईशाल रे
   ओरे ए हेन सुंदर नारी केमने
   जाईबेन छारि मईशाल बंधु रे'[14].

'भवइया' लोकगीत के कई प्रकार है. जैसे – भवइया-चटका, खिरोल, दरिया-ओ-दिधल, नासा, गड़ान, मईशाल भवइया आदि.

'**भवइया-चटका**' - राजवंशी इलाके का यह भवइया - चटका, गान बंगाल के लोक संगीत के एक अनन्य तथा असाधारण संगीत शैली है. जैसे- भवइया गाने में 'रे', 'ओरे', 'किओ' आदि शब्द का व्यवहार किया जाता है.

[13] सेख़, आसगर आलि: गोयालपाड़ा लोकगीत आर मोर रचना गान, पृ.-7.

[14] वही.

एवं भवइया-चटका गाने में हलपल, झलमल, डुबुडुबु आदि ध्वनात्मक क्रिया विशेषण शब्द का व्यवहार होता है. निम्न उदाहरण दिया गया है.

'भवइया' गीत -

1. 'बैचेया खाईलेक् मोक दूरांतर रे
   ओ भारिरे आर ना देखिम मुई
   बन्धुयार बाड़ि धर रे
2. अभागी नारीर प्राण रे धन
   केमने धैरज माने रे'[15]. आदि

भवइया - चटका गान

1. 'ओ भाई रे चलमल कि झलमल करिया
2. ना नागे मोर खाटो भातार
   ख्याटुाऊ-ख्याटुाऊ करे'[16]. आदि.

इन दोनों गीत शैली में व्यवहार किए जाने वाले तालों में भी अंतर है. जैसे - 'भइवया' गीत में कहरवा ताल बजाया जाता है, छंद होता है 4-4 मात्राओं का एवं 'भवइया-चटका' में दादरा ताल बजाया जाता है, छंद होता है 3-3 मात्राओं का.

वाद्यः

'भवइया' के साथ परंपरागत रूप से 'दोतारा' वाद्य बजाया जाता है. इसका लंबाई 2½ फुट होती है. यहाँ यह कहना जरूरी है कि उत्तर बंगाल एवं पूर्व बंगाल में व्यवहार किए जाने वाले 'दोतारा' के गठन प्रणाली में कुछ अंतर है. जैसे- पूर्व बंगाल के दोतारा में लोहे के तार व्यवहार होते हैं. विलम्बित, मध्य तथा दुरत लय संगीन को सुश्रृंखल छंद प्रकाश करने के लिए सहयोगिता करता है. भवइय गाने की यह लय सुर को माधुर्य मंडित कर हृदय में स्पंदन जागरित करता है. अर्थात् हृदय को मोहित कर देता है. 'दोतारा'' की ध्वनि तरंग की रेंज बहुत दूर तक जाती है. उत्तर बंगाल के दोतारा के तार रेशम के धागे से बना होता है. पर रेशम का धागा ना मिलने पर नाईलन के तार का व्यवहार होता है. दायें हाथ की एक चुटकी की सहायता से तार के ऊपर 'डां' के द्वारा छेड़ने से सुर की झंकार सृष्टि होती है. बायें हाथ की उंगलियों से दोतारा के ऊपरी भाग के खोल के नीचे जो तार है उसी को दबाकर सुर में सूक्ष्मता लाई जाती है एवं इस प्रकार से ही - सा, रे, ग, म, प, ध, नि, आदि स्वरों की सृष्टि होती है.

'भवइया' गीत के शब्द उच्चारण के बीचों-बीच में 'ह' का उच्चारण इस गीत को और भी श्रुति मधुर कर देती है. उत्तर बंगाल की लोक भाषा का एक और वैशिष्टय यह है कि शब्द के आदि, मध्य एवं अंत में स्वर ध्वनि उच्चारण में परिवर्तन अर्थात् उच्चारण करने का तरीका. जैसे - बाप-माँ को (पिता-माता) बाप-माओ कहना,

[15] वही, पृ.-8.

[16] वही.

अथवा यौवन को यैवन कहना, फिर शब्द के शुरु में अगर 'र' रहता है तो उसे 'अ' बोलना, एवं 'अ' रहे तो उसे 'र' बोला जाता है. जैसे - रौद्र (धूप) को 'अउद' बोलना, रंधन (खाना पकाना) को अन्दन बोलना, आदि.

'भवइया' के संरक्षण एवं वर्तमान अवस्था:

राजवंशी समाज का यह भवइया संगीत ही राजवंशी लोगों के स्वतंत्र सांस्कृतिक इतिहास, आत्म परिचय एवं पारिवारिक जीवन के सुख-दुख का साथी है. इस संगीत को आज विभिन्न समाज तथा जातियों ने ग्रहण किया है परंतु यहाँ ये कहना भी जरूरी है कि इस गीत को प्रारंभ में हिन्दु समाज में सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता था, जो लोग यह गाना गाते थे वह निर्जन इलाके में जाकर गाना गाते थे. समाज के नीची श्रेणी के मानव जन (जैसे- गाय चराने वाले, खेतों में काम करने वाले, भैंस चराने वाले - आदि) की कोई मर्यादा नहीं थी, समाज की ऊँची श्रेणी के लोगों के पास. इसलिए यह लोग नदी के तट पर गाय, भैंस आदि चराते समय अथवा खेतों में काम करते समय अथवा नदी में नाव चलाते समय ये भवइया गीत गाया करते थे. अनुमान किया जाता है कि 'भवइया' संगीत का आंरभ काल - पंचदश -षोरष शताब्दी है. उस समय इस गाने की कोई लिखित लिपि नहीं थी, मात्र मुंह के द्वारा गाना गाने का ही प्रचार था. 'इस गीत की प्रथम लिपि या कथा संगृहीत होती है सन् 1904 ई. में, सर जि. ए. ग्रीयरसन के द्वारा प्रकाशित 'Linguistic Survey of India' ग्रन्थ में'[17]. तत् पश्चात् इस गाने का संग्रह करने के लिए रंगपुर निवासी सुप्रसिद्ध संस्कृत पंडित 'यादवेश्वर तर्क रत्न जी ने विशेष भूमिका निभायी. उन्होंने सन् 1907 में इस गाने को संग्रह कर 'रंगपुर साहित्य परिषद पत्रिका' में प्रकाशित किया. इस प्रकार कुछ और भी 'भवइया' गीत सन् 1908-1912 तक 'रंगपुर साहित्य परिषद में प्रकाशित किये गये. परंतु उन गानों की रचना काल एवं रचयिता के नाम का कुछ पता नहीं चला. 1930 के दशक में भी कुछ गाने संगृहीत हुए एवं यह गाने पुस्तकादि तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए थे. 1960 के दशक में कुछ विद्वानों ने जैसे - प्यारी मोहन दास, अब्दुल करीम आदि ने कुछ भवइया गीतों की रचना की, 1970 के दशक में कुछ नये कलाकार तथा विद्वानों ने भी 'भवइया' रचना की, एवं अस्सी के दशक में इस 'भवइया' गीत की संख्या और बढ़ी. फलस्वरूप यह संगीत पुस्तकें और पत्रिकाओं के माध्यम से और भी ज्यादा प्रकाशित हुए.

इसी कारण वर्तमान दशक में भवइया संगीत केबल मात्र मुहं में गाये जाने वाला संगीत ही नहीं बल्कि यह संगीत भी बाकी सभी लोकसंगीत जैसा ही पूर्णरूप से लिखित संगीत है. एक/दो गानों को छोड़कर बाकी गानों का मान भी उतना नहीं, ना ही उतनी जनप्रियता उन गानों ने अर्जित की.

परिवर्तन:

वर्तमान समय में भवइया गीत में अनेक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं. जैसे - इस संगीत मौखिक रूप से प्रचार होने के कारण इसमें विभिन्न भाषाओं का आविर्भाव हुआ है. आजकल इन गानों के ऊपर नृत्य भी किया जाता है. आजकल दोतारा की अतिरिक्त इन गीतों की संगत में और भी वाद्यों का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे - ढोलक, शरिंदा, सराज, व्याना, बंशी आदि. इस समय के कुछ गायक/गायिकाओं के नाम इस प्रकार है -लक्ष्मी राय, सुनिती राय, अंजली राय, पुनम वरूया, माया रानी राय, प्रवीर राय, नजरूल इस्लाम, हमिदा सरकार आदि.

[17] वही, पृ.-9

आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्र आदि में भी इस संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं एवं इन गानों की बहुत सारी रिकांर्डिंग भी की गई है. इस प्रकार से इतिहास और विकास के कालक्रम से गुजरती -विचरती भवइया गीत शैली अपने प्राचीन रूप को साथ लेते हुए गांव की सीमा अतिक्रम कर आज मंच तक आ पहुंची है, जिनके पीछे विभिन्न संगठन, संस्थाएँ तथा अभिज्ञ भवइया गायक इस सांस्कृतिक धरोहर को गति देने के लिए समर्पित भाव से लगे हुए हैं.

'भवइया' गीत में प्रयुक्त वाद्ययंत्र:

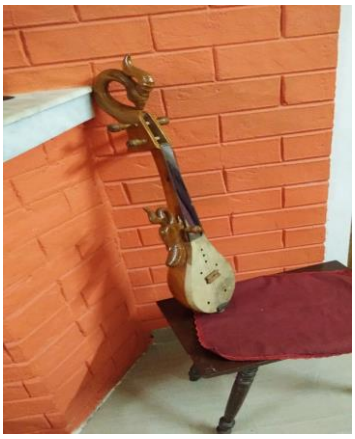

सराज

बांसुरी

दो तारा

शारिंदा

व्यना

संदर्भ ग्रंथ-

1. देव, रनजित: *लोक साहित्य भवइया गान*, एस. एस. पाब्लिकेशन, कोलकाता, 1915
2. बर्मा, सुखविलास: *भवइया चटका*, द्वितीय संस्करण, सोपान, कोलकाता, 2004
3. सेख़, आसगर आलि: *गोयालपाड़ा लोकगीत आर मोर रचना गान*, गोयालपाड़ा, 2010
4. http://coochbehar.nic.in/htmfiles/rajbari-exclusive.html. अभिगमन तिथि -18.8.2019
5. http://bn.m.wikipedia.org अभिगमन तिथि - 19.8.2019.